मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

छात्रों ने गंवाया सारा दिन 3
मनुवाद के पैरोकार 4
इजाफे का खेल एनपीए 5
गटर गैस से चाय नहीं बनती 8

वर्ष 31 अंक -39 फ़रीदाबाद 23-29 सितम्बर 2018 फोन : - 9999595632 ₹2.50

सिंहासन ख़ाली करो नरेंद्र मोदी!

वाराणसी से डॉ अजय कृष्ण चतुर्वेदी की ग्राऊंड जीरो रिपोर्ट

प्रधानमंत्री और वाराणसी के सांसद नरेंद्र मोदी की संसदीय क्षेत्र में उनके जन्मदिन के दूसरे दिन बीएचयू के एम्फीथिएटर मैदान पर यह 14वीं सभा थी। राजनीतिक हल्कों में माना जा रहा था कि लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने के पहले की यह उनकी अंतिम सभा है। सभा का समय पहले सुबह 10 बजे निर्धारित किया गया था, बाद में उसे 10.30 कर दिया गया। लेकिन प्रधानमंत्री अपने सहयोगियों संग सभा स्थल पर पहुंचे 11.04 बजे और भाषण देना शुरू किया 11.33 बजे। यूं तो उनका संबोधन 12.22 बजे तक चला। लेकिन यह पहला मौका था जब लोग उनके भाषण के बीच में उठ कर जाने लगे।

प्रधानमंत्री ने यूं तो करीब घंटे भर तक भाषण दिया लेकिन लोग थे कि उनका प्रारंभिक संबोधन और चार साल की उपलब्धियों के फेहरिश्त सुनने से इंकार सा कर दिया और महज 10 से 12 मिनट बाद ही पंडाल धीरे-धीरे खाली होने लगा। पीछे बैठे लोगों का जत्था पंडाल से बाहर निकलने लगा। अति तो तब हो गई जब अग्रिम पंक्ति में बैठे लोग भी उठ कर जाने लगे। एक वक्त ऐसा भी आया जब भाषण के बीच में ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बोलना पड़ा, लोगों से अपील करनी पड़ी कि बैठ जाओ भैया, यह वाक्य उन्होंने तीन बार दोहराया, लेकिन उसका कोई असर नहीं पड़ा। उसके बाद

पीएम के चेहरे पर हताशा साफ नजर आई। शेष वक्त उन्होंने पानी पीते और रह-रह कर माथे का पसीन पोछते ही बिताया। इसे लेकर वहां मौजूद लोग भी चकित थे कि आखिर ये हो क्या रहा है। लोगों आखिर अपने सांसद को सुनना क्यों नहीं चाहते।

प्रधानमंत्री के भाषण के दौरान उठ कर जातीं कुछ महिलाओं और बीएचयू की छात्राओं से मैंने सवाल भी किया कि वो क्यों जा रही हैं तो उन्होंने उत्तर देने की बजाय सवाल को टालना ही ज्यादा मुनासिब समझा। एक महिला ने कहा कि, जब सबै जात हौ त हम रुक के का करबै। छात्राओं का एक समूह ऐसा मिला जिसने हंसते हुए टांट किया, बहुत भीड़ है न वहां।

यह पहला मौका था जब पीएम का भाषण सुनना लोगों को गवारा नहीं था। इससे पहले की 13 सभाओं में ऐसा दृश्य कभी नहीं दिखा। ज्यादा दिन नहीं हुए अभी जुलाई में ही पीएम मोदी राजातालाब में जनसभा को संबोधित करने आए थे, वहां उन्होंने पूरे तेवर के साथ 45 मिनट तक भाषणा दिया था। एक हजार करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण किया था। यह दीगर है कि जिन योजनाओं का लोकार्पण उन्होंने तब किया था उसमें से कई योजनाएं आज तक मूर्त रूप नहीं ले पाई हैं। हालांकि उन्होंने इस 14वें कार्यक्रम में भी उन योजनाओं का उल्लेख किया और बताया कि उन योजनाओं से बनारस ही नहीं पूर्वांचल के लाखों लोगों का भला हो रहा है। पीएम के इस बयान पर कुछ लोग हंसते भी नजर आए।

बता दें कि अप्रैल-मई 2014 से लेकर 18 सितंबर 2018 के बीच में नरेंद्र मोदी जब भी बनारस आए लोगों ने पलक पावड़ों पर बिठाया। अपार जनसमूह जुटता रहा उन्हें सुनने के लिए। वह भी भारी भीड़ देख उत्साहित हो कर ओजस्वी भाषण देते रहे। लेकिन आज उनकी बॉडी लैंगवेज भी बता रही थी कि कहीं कुछ तो ठीक नहीं है। बता दें कि इस सभा को लेकर भाजपा नेताओं का दावा था कि बीएचयू के एम्फीथिएटर मैदान पर 50 हजार की भीड़ जुटाई जाएगी। अब गिनती तो नहीं हो सकी भीड़ की पर सुबह से ही पंडाल खाली रहा, धीरे-धीरे लोग आते रहे। आने वालों में भी ग्रामीण महिलाओं और विश्वविद्यालय के छात्रावासों में रहने वाली छात्राओं की तादाद ज्यादा रही। लेकिन जब वे महिलाएं और छात्राएं ही जाने लगीं वह भी पीएम के भाषण के बीच तो स्थानीय नेताओं ने भी किनारा कस लिया।

वैसे अपने करीब घंटे भर के भाषण में पीएम ने अपने संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए केंद सरकार द्वारा पिछले चार सालों में लागू योजनाओं की फेहरिस्त पेश की। एक-एक का उल्लेख करते हुए उससे होने वाले लाभ का गुणगान किया। चाहे वह आईपीडीएस के तहत बिजली के तारों को भूमिगत करने का मसला हो, उज्ज्वला योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को गैस कनेक्शन देने का मसला हो, ट्रेड फेसिलिटी सेंटर का मसला हो, कैंसर अस्पताल का मसला हो, बीएचयू को एम्स का दर्जा देने का मसला हो, राजातालाब में कार्गो सेंटर का मसला हो। सभी योजनाओं को गिनाया।

पर वह एक तरफ अपनी उपलब्धियां गिनाते रहे, चार साल का हिसाब देने की बात करते रहे, काशी की जनता को अपना मालिक और हाईकमान बताते रहे, उधर जनता का कुर्सी छोड़ पंडाल से बाहर जाने का सिलसिला रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। आजिज आ कर पीएम को अपना भाषण बंद कर देना पड़ा।

गैंगरेप : 15 घंटे में अपराधी काबू, अपराध कब काबू आयेंगे !

बल्लबगढ़ (म.मो.) मंगलवार की रात चार बलात्कारियों के चंगुल से छूट कर पीड़िता करीब साढे दस बजे सेक्टर 3 स्थित अपने घर पहुंची। करीब एक घंटे के सोच विचार के बाद 11.35 बजे वह परिजनों सहित सेक्टर 3 पुलिस चौकी पहुंची। वहां मौजूद कार्यवाहक इन्चार्ज ने पीड़िता को सुनने के बाद 11.45 पर थाना सेक्टर 7 में अपने कार्यवाहक एसएचओ को सूचित किया। 11.58 पर कार्यवाहक एसएचओ चौकी पहुंच गया। पीड़िता की बात सुनने के बाद उन्होंने महसूस किया कि वह उससे अधिक बातचीत करने में सक्षम नहीं है, कोई महिला अधिकारी ही बेहतर ढंग से बात को सुन व समझ सकती है। लिहाजा एसएचओ सेक्टर 7 अपनी सरकारी गाड़ी में बैठा कर पीड़िता को 12.30 पर महिला थाना बल्लबगढ़ ले आये।

इस थाने में महिला कार्यवाहक एसएचओ ने पीड़िता व उसके दोस्त से खुलकर सवाल-जवाब किये। असल में यहां समस्या यह आ रही थी कि पीड़िता अपना बयान ठीक से नहीं दे पा रही थी। वह पूरे घटनाक्रम व घटना स्थल को स्पष्ट भी नहीं कर पा रही थी। दूसरी ओर पीड़िता के परिजन उसके मित्र को ही साजिश में शामिल मान रहे थे, जबकि पीड़िता ऐसा नहीं मान रही थी। इस पूरी पूछताछ एवं पूरी घटना व घटना-स्थल को समझने-समझाने में करीब ढाई घंटे लगे जो अक्सर होता है। करीब तीन बजे पूरी स्थिति स्पष्ट हो गयी तो मुकदमा दर्ज करने की कार्यवाही शुरू करके पीड़िता को डॉक्टरी जांच एवं

उपचार हेतु बीके अस्पताल भेज दिया गया।

इसके साथ-साथ, थाना परिसर में ही अपने आवास पर मौजूद एसीपी बलबीर सिंह को सूचित किया गया। उन्होंने तुरंत थाने में पहुंच कर सारे केस को समझा। तब तक पीड़िता भी बीके अस्पताल से लौट आई थी। एसीपी ने भी उससे बात-चीत करके मामला की तस्दीक कर ली। इतना होते-होते सुबह के साढे पांच बज गये, अंधेरा छंटने लगा था। एसीपी व अन्य पुलिसकर्मी पीड़िता व उसके मित्र को लेकर घटना-स्थल का निरीक्षण करने पहुंच गये।

सारी स्थिति स्पष्ट होने के बाद डीसीपी बल्लबगढ़ व सीपी को सूचित किया गया। सीपी अमिताभ सिंह ढिल्लों ने मामले की गंभीरता को समझते हुए तुरंत कमान अपने हाथ में ले ली। एफएसएल (फ़ारेंसिक साईंस लैबोरेट्री) की टीम को मौका-ए वारदात पर पहुंचने के आदेश दिये। पीड़िता व उसके मित्र द्वारा दिये गये सुरागों के आधार पर साइबर सैल को काम पर लगा दिया। इन सब कामों को निपटाने के बाद वे स्वयं महिला थाने में आ बैठे। घटना-स्थल का निरीक्षण कर चुके अफ़सरों से प्राप्त जानकारी से संतुष्ट नहीं हुए तो 11 बजे स्वयं घटना स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे।

एफएसएल टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण इतनी बारीकी से किया कि वहां पड़े बीड़ियों के टुकड़े व बाल तक ढूंढ निकाले। एक अपराधी की टूटी चप्पल तो पहले ही पुलिस ने बरामद कर ली थी, शेष बारीक बरामदगियां एफएसएल मुखिया डॉक्टर मनीषा की समझदारी व मेहनत से संभव हो पाई। अपराध विज्ञान के अनुसार पाये गये बाल व बीड़ी के टुकड़े बहुत ही महत्वपूर्ण सबूत का काम करेंगे।

इन सारी कार्यवाहियों के साथ-साथ सूचना मिलते ही सीपी ने एक डीसीपी, दो एसीपी व 8 इन्स्पेक्टरों के नेतृत्व में करीब 60 पुलिसकर्मियों को बड़े ही व्यवस्थित ढंग से काम पर लगा दिया था और एक-एक सूचना व कड़ी का स्वयं आंकलन करते हुये दिशा निर्देशन करते रहे। पीड़िता व उसके मित्र द्वारा दी गयी छोटी-छोटी जानकारियों को पुलिस ने अपनी जांच का आधार बनाया। अपराधियों की भाषा व बोल-चाल के लहजे से यह समझ में आया कि वे कहीं बाहर से योजना बना कर आये हुए नहीं बल्कि आस-पास के ही थे। इससे पुलिस जांच का दायरा गांव मुजेड़ी, चंदावली व सेक्टर 2 तथा 3 तक सिमट गया। एक अपराधी की टूटी चप्पल व बीड़ियां बता रही थी कि वे बहुत निम्न वर्ग के लोग रहे होंगे।

वे आपस में एक दूसरे के जो नाम ले रहे थे उससे साइबर सैल को उनके मोबाइल फ़ोन ट्रेस करने में पूरी मदद मिली। बीड़ी सुलगाने के लिये बार-बार माचिस जलाने व मोबाइल की लाइटों के इस्तेमाल से उनके चेहरे, नैन-नक्श व पहनावे आदि का जो विवरण पीड़िता ने दिया उन सबसे पुलिस ने शाम करीब 4-5 बजे तक अपराधियों को पिन प्वायंट तो कर लिया लेकिन उन पर हाथ डालने की बजाय बहुत ही गुप्त तरीके से अपनी निगरानी में ले लिया।

सभी चारों अपराधी मूल रूप से तो यूपी के मुसलमान हैं परन्तु बरसों पहले उनके मां-बाप यहां आकर बस गये थे। लिहाजा अब ये लोग यहीं के जन्म-जात बाशिंदे हैं। मामूली पढे-लिखे व शादी-शुदा छोटी-मोटी नौकरी करके अपनी गुजर-बसर करते थे। लेकिन इनके महंगे मोबाइल, ब्लू टूथ, बॉडी-बिल्डिंग व उसके लिये महंगे फूड सप्लीमेंट खाने जैसे शौक मामूली वेतन से पूरे नहीं हो पाते थे। इसलिये वे गाहे-बगाहे जहां-तहां लूट की

शेष पेज दो पर